

[2023] 3 एस. सी. आर 56

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

क.

अनंत थानूर करमुसे बनाम.

महाराष्ट्र और ओआरएस का राज्य। (2023 की आपराधिक अपील No.13)

24 फरवरी, 2023

[एम. आर. शाह और सी. टी. रविकुमार, जे. जे.]

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 -s.173 (8)-आगे की जाँच-जाँच का सी. बी. आई. को हस्तांतरण-अपीलार्थी ने तत्कालीन कैबिनेट मंत्री की एक वायरल तस्वीर फेसबुक पर साझा की-उनके अनुसार, अपीलार्थी को पुलिस अधिकारियों द्वारा जबरन उनके आवास से ले जाया गया और पीटा गया और पुलिस द्वारा धमकी दी गई-अपीलार्थी द्वारा दर्ज की गई एफ़. आई. आर., हालाँकि, कैबिनेट मंत्री का नाम एफ़. आई. आर. में नामित नहीं किया गया था-जाँच को सी. बी. आई. या किसी अन्य एजेंसी को स्थानांतरित करने के लिए उच्च न्यायालय में रिट याचिका दायर की गई थी-रिट याचिका के लंबित रहने के दौरान, निचली अदालत ने दायर आरोप पत्र के आधार पर अभियुक्त के खिलाफ आरोप तय किए-उच्च न्यायालय ने जाँच को स्थानांतरित करने से इनकार कर दिया-उच्च न्यायालय ने याचिका को खारिज करते हुए कहा कि एक बार मजिस्ट्रेट/ट्रायल द्वारा आरोप तय किए गए हैं। जाँच केवल "दुर्लभ और असाधारण मामलों" में ही सी. बी. आई. को हस्तांतरित की जा सकती है-उच्च न्यायालय ने जाँच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने से इनकार करने में कोई त्रुटि नहीं की है-वास्तविक जाँच उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद और उच्च न्यायालय द्वारा वर्तमान कार्यवाही में विभिन्न आदेश पारित करने के बाद ही शुरू हुई-राज्य की जाँच एजेंसी के अनुसार भी, कुछ पहलुओं पर आगे की जाँच की आवश्यकता है-पीड़ित को निष्पक्ष जाँच और निष्पक्ष सुनवाई का मौलिक अधिकार है-इसलिए, केवल आरोप पत्र दाखिल करना और आरोप तय करना आगे की जाँच/पुनः जाँच/डी नोवो जाँच का आदेश देने में बाधा नहीं हो सकती है, यदि तथ्यों की आवश्यकता है-संबंधित समय पर राज्य की जाँच एजेंसी द्वारा कोई उचित जाँच नहीं की गई और यहाँ तक कि भौतिक सबूत भी एकत्र नहीं किए गए थे-उच्च न्यायालय

ग

डी.

ई.

च

जी.

एच.

56

57

अनंत थानूर कर्मूसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस।

क.

आंशिक रूप से अपील को स्वीकार करते हुए, न्यायालय ने

अवधारित **1.** कानून की स्थिति, मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इस न्यायालय की राय है कि उच्च न्यायालय ने जांच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने से इनकार करने में कोई त्रुटि नहीं की है। यहां तक कि अपीलार्थी ने भी इस तरह की प्रार्थना पर जोर नहीं दिया है। जहाँ तक जाँच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने से इनकार करने का संबंध है, न्यायालय उच्च न्यायालय द्वारा लिए गए दृष्टिकोण से पूरी तरह सहमत है। धरम पाल और भारती तमांग के मामले में इस न्यायालय द्वारा निर्धारित कानून को लागू करते हुए और पूर्ण न्याय करने और निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई को आगे बढ़ाने के लिए, संवैधानिक अदालतें आरोप पत्र दायर होने और आरोप तय होने के बाद भी आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच का आदेश दे सकती हैं। [पैरा **7.4** और **11**] [70-ई-एफ; 75-डी]

ग

3. यह ध्यान दिया जाना आवश्यक है कि वर्तमान मामले में, प्राथमिकी में आरोप, शुरू से ही, आरोपी संख्या **13** के खिलाफ थे, जो उस समय उच्च पद पर बैठे कैबिनेट मंत्री थे। प्रासंगिक समय पर भी, जब राज्य पुलिस ने **2020** की संख्या **120** वाली प्राथमिकी की जांच की, तो पहले आरोप पत्र और दूसरे आरोप पत्र में आरोपी संख्या **13** का नाम नहीं था। जहाँ तक कि जाँच भी पूरी तरह से की गई थी। वास्तविक जाँच उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद और उच्च न्यायालय द्वारा वर्तमान कार्यवाही में विभिन्न आदेश पारित करने के बाद ही शुरू हुई। एफ. आई. आर. में आरोप बहुत गंभीर थे जिनमें मौजूदा कैबिनेट मंत्री द्वारा शक्तियों का दुरुपयोग और शिकायतकर्ता का अपहरण, अपहरण और पिटाई शामिल थे। [पैरा **12.1**] [75-जी-एच; 76-ए-बी]

डी.

ई.

च

4. चाहे जो भी हो, राज्य की जाँच एजेंसी के अनुसार, आगे की जाँच की आवश्यकता है। जैसा कि इस न्यायालय द्वारा अपने विभिन्न निर्णयों में देखा और अभिनिर्धारित किया गया है, पीड़ित को निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई का मौलिक अधिकार है। इसलिए, यदि तथ्यों की आवश्यकता है तो केवल आरोप पत्र दाखिल करना और आरोप तय करना आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच का आदेश देने में बाधा नहीं हो सकती है। [पैरा **12.3**] [77-बी]

जी.

5. न्यायालय का प्रयास केवल निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई होना चाहिए। अतः तथ्यों में और

एच.

58 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 3 एस. सी. आर.

क.

ऊपर वर्णित मामले की परिस्थितियों में, इस न्यायालय की राय है कि आगे की जांच के लिए एक मामला बनाया गया है और राज्य एजेंसी को आगे की जांच करने और आगे की सामग्री को रिकॉर्ड पर लाने की अनुमति दी जा सकती है, जो निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई को आगे बढ़ाने में हो सकती है। उच्च न्यायालय ने **2020** की संख्या **119** और **120** वाली एफ. आई. आर. में राज्य पुलिस एजेंसी को आगे की जांच करने का आदेश और/या अनुमति नहीं देने में बहुत गंभीर गलती की है। उच्च न्यायालय ने ऊपर वर्णित प्रासंगिक पहलुओं पर विचार नहीं किया है और इसलिए इस न्यायालय का हस्तक्षेप आवश्यक है। [पैरा **13**] [77-ई-जी]

ग

हिमांशु कुमार और अन्य। बनाम छत्तीसगढ़ राज्य

और अन्य, 2022 एससीसी ऑनलाइन एससी 884; भारती तमांग

बनाम भारत संघ और अन्य **(2013) 15 एस. सी. सी. 578:[2013] 14 एस. सी. आर. 525**; धरम पाल बनाम हरियाणा राज्य और

ओआरएस., (2016) 4 एससीसी 160:[2016] 1 एस. सी. आर. 194-पर निर्भर।

डी.

बाबूभाई बनाम गुजरात राज्य, **(2010) 12 एस. सी. सी. 254:[2010] 10 एस. सी. आर. 651**; राम जेठमलानी बनाम भारत संघ

(2011) 8 एससीसी 1:[2011] 8 एससीआर 725; विनुभाई हरिभाई

मालवीय और ओआरएस। बनाम गुजरात राज्य और अन्न, **(2019)**

17 एससीसी 1:[2019] 15 एस. सी. आर. 936; रामा चौधरी बनाम बिहार राज्य, (2009) 6 एस. सी. सी. 346: [2009] 5 एस. सी. आर. 482-संदर्भित।

ई.

निर्णीत विधि संदर्भ

[2013] 14 एससीआर 525

पर भरोसा किया

पैरा **8.1,11**

च

[2010] 10 पैरा 8.1 [2011] 8 एस. सी. आर. 725 को संदर्भित एस. सी. आर. **651** पैरा **8.1** को संदर्भित

[2016] 1 एससीआर 194

पर भरोसा किया

पैरा **3.4,8.2,11**

[2019] 15 एस. सी. आर. 936 पैरा **5.6,9 [2009] 5 एस. सी. आर. 482** पैरा **5,7,10** में निर्दिष्ट है।

जी.

आपराधिक अपीलीय अधिकारिता: 2023 की आपराधिक अपील No.13।

2021 के डब्ल्यू. पी. No.411 में बॉम्बे में उच्च न्यायालय के न्यायिक निर्णय और आदेश दिनांक 26.04.2022 से।

एच.

59

अनंत थानूर कर्मसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस।

क.

महेश झेथमलानी, सिद्धार्थ दवे, वरिष्ठ अधिवक्ता।, अनुराग शाह, उत्सव त्रिवेदी, अनिरुद्ध गानू, सुश्री मणिनी रॉय, हिमांशु सचदेवा, सुश्री शिवानी भूषण, पीयूष तिवारी, सुश्री कंजनी शर्मा, प्रस्तुत दलवी, सुश्री मुग्धा पांडे, सुश्री आस्था प्रसाद, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए।तुषार मेहता, एस. जी., सुश्री ऐश्वर्या भाटी, ए. एस. जी., डॉ. अभिषेक मनु सिंघवी, शेखर नाफडे, वरिष्ठ अधिवक्ता।, सुश्री दीक्षा राय, तुषार सोनावने, सुश्री रागिनी पांडे, सुश्री अतिगा सिंह, राहुल चिटनिस, सिद्धार्थ धर्माधिकारी,

आदित्य अनिरुद्ध पांडे, भरत बागला, सुश्री कीर्ति दधीच, रजत नायर, प्रत्यूष श्रीवास्तव, माधव सिंहल, ए. के. शर्मा, अधिवक्ता।
उत्तरदाताओं के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

ग

एम. आर. शाह, जे.

1. 2021 की रिट याचिका संख्या 411 में बॉम्बे में उच्च न्यायालय द्वारा पारित विवादित निर्णय और आदेश से व्यथित और असंतुष्ट महसूस करते हुए, जिसके द्वारा उच्च न्यायालय ने अपीलकर्ता द्वारा प्रस्तुत उक्त रिट याचिका को खारिज कर दिया है- पीड़ित ने जांच को केंद्रीय जांच ब्यूरो या किसी अन्य एजेंसी को स्थानांतरित करने की मांग की है, जो 2020 की एफ. आई. आर. संख्या 119 और 2020 की 120 की जांच/पुनः जांच के लिए वर्तक नगर पुलिस स्टेशन, ठाणे में दर्ज है, मूल रिट याचिकाकर्ता-पीड़ित ने वर्तमान अपील को प्राथमिकता दी है।

डी.

ई.

2. वर्तमान अपील की ओर ले जाने वाले तथ्य और संक्षेप में अपीलार्थी की ओर से मामले के अनुसार निम्नानुसार हैं:- -
प.व. 98 का कथन भी उपयोगी रूप से पुनः इस प्रकार पेश किया जा सकता है -

2.1 यह कि अपीलार्थी एक सिविल इंजीनियर है, एक सलाहकार के रूप में काम कर रहा है, ने अपने फेसबुक खाते पर 05.04.2020 पर महाराष्ट्र राज्य के तत्कालीन कैबिनेट मंत्री श्री जितेंद्र अवध (जिन्हें बाद में उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद आरोपी संख्या 13 के रूप में प्रस्तुत किया गया है) की एक वायरल तस्वीर साझा की, जिसमें भारत के माननीय प्रधान मंत्री का उपहास करने के उनके कार्य की आलोचना की गई। अपीलार्थी के अनुसार, रात में लगभग 11.50 बजे <ID2 पर, चार पुलिसकर्मी, दो नागरिक पोशाक पहने और अन्य दो वर्दी में उनके आवास पर आए और उन्हें जबर्न उक्त मंत्री के बंगले में ले गए। अपीलार्थी के अनुसार, इसके बाद, मंत्री ने अपने आदमियों को उसे पीटने और मंत्री की उक्त वायरल तस्वीर को प्रसारित करने के लिए माफी मांगने का निर्देश दिया। मंत्री ने उन्हें तुरंत पोस्ट हटाने की धमकी दी। इसके बाद, मंत्री के एक सहयोगी ने अपीलार्थी को उसके नंबर पर फोन किया क्योंकि उसने अपना फोन अपने घर में छोड़ दिया था और अपनी पत्नी से विवादास्पद पोस्ट को हटाने के लिए कहा था। याचिकाकर्ता के अनुसार,

च

जी.

एच.

60

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

क.

मंत्री के परिसर में मौजूद पुलिस कर्मियों ने उन्हें बेरहमी और बेरहमी से पीटा।

2.2 कि अपीलार्थी पुलिस स्टेशन गया और उसे जानकारी मिली कि भारतीय दंड संहिता (आई. पी. सी.) की धारा 292 और सूचना और प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 66 (ई) के तहत 2020 की संख्या 119 वाली एक एफ. आई. आर. उसके खिलाफ पुलिस द्वारा दर्ज की गई है, वर्तमान मामले में आरोपी संख्या 3 श्री हितेश वानी की शिकायत पर और मंत्री के करीबी सहयोगी का एकमात्र उद्देश्य उसे धमकी देना है कि अगर वह उक्त घटना के बारे में शिकायत दर्ज करने का फैसला करता है। अपीलार्थी की ओर से यह मामला है कि उसके बाद अपीलार्थी ने मंत्री और अन्य पुलिस अधिकारियों के खिलाफ विशिष्ट आरोपों के साथ पूरी घटना को बिना किसी डर के सुनाया और मंत्री और उनके लोगों के खिलाफ शिकायत दर्ज की। हालांकि, मंत्री के

नाम, जिनके खिलाफ विशिष्ट आरोप लगाए गए थे और उनके लोगों का उल्लेख वर्तक नगर पुलिस स्टेशन, ठाणे में धारा 365,143,144,147,149,324 और 506 (2) के तहत अपराधों के लिए 2020 की संख्या 120 वाली प्राथमिकी में नहीं किया गया था। अपीलार्थी की ओर से यह मामला है कि संबंधित मंत्री का नाम प्राथमिकी में नहीं था क्योंकि वह राज्य सरकार में मौजूदा कैबिनेट मंत्री थे।

ग

डी.

2.3 इसके बाद पक्षपात की आशंका और आरोप लगाते हुए और यह आरोप लगाते हुए कि पूरी जांच ढोंग और लापरवाही से की गई है और पुलिस द्वारा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं किया गया है, अपीलार्थी ने वर्तमान रिट याचिका के माध्यम से उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और उपरोक्त प्राथमिकियों की जांच को केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई), मुंबई या किसी अन्य एजेंसी को स्थानांतरित करने का अनुरोध किया।

ई.

ऐसा प्रतीत होता है कि इसके बाद उच्च न्यायालय द्वारा रिट याचिका में विभिन्न अंतरिम आदेश पारित किए गए और राज्य की जांच एजेंसी को जांच करने के लिए मजबूर होना पड़ा। पुलिस ने शुरू में संबंधित मंत्री श्री जितेंद्र अवध को आरोपी के रूप में नामित किए बिना आरोप पत्र दायर किया। हालाँकि, इसके बाद और उच्च न्यायालय के समक्ष रिट याचिका के लंबित रहने के दौरान और उच्च न्यायालय द्वारा जांच की निरंतर निगरानी को देखते हुए, मंत्री श्री जितेंद्र अवध को उक्त घटना के दो साल बाद आरोपी के रूप में जोड़ा गया था। कि इसके बाद रिट याचिका के लंबित रहने के दौरान, विद्वत विचारण न्यायालय ने अभियुक्त के खिलाफ पहले से दायर आरोप पत्रों के आधार पर आरोप तय किए, जो अपीलार्थी के अनुसार वास्तव में किए गए अपराधों की तुलना में कम अपराधों के लिए थे, जैसे कि अपहरण, अपहरण और गंभीर चोट पहुंचाना। कि उसके बाद विवादित निर्णय ए द्वारा

च

जी.

एच.

61

अनंत थानूर कर्मसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

और आदेश देते हुए, उच्च न्यायालय ने जांच को सी. बी. आई. और/या किसी अन्य एजेंसी को स्थानांतरित करने की मांग करने वाली उक्त रिट याचिका को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि जांच के बाद, आरोप पत्र दायर किया गया है और उच्च न्यायालय ने प्रथम दृष्टया राय दी है कि आरोप पत्र/पूरक आरोप पत्र दायर करके, जांच एजेंसी ने सभी कोणों से और चिकित्सा रिपोर्ट पर विचार करने के बाद और मोबाइल फोन की सी. आर. डी. एकत्र करने के बाद भी जांच की है और एक बार मजिस्ट्रेट/ट्रायल कोर्ट द्वारा आरोप तैयार किए जाने के बाद, यह कहा जा सकता है कि मुकदमा शुरू हो गया है और इसलिए, उसके बाद, फिर से जांच/आगे की जांच की अनुमति नहीं है। विवादित निर्णय और आदेश द्वारा, उच्च न्यायालय ने उक्त रिट याचिका को खारिज कर दिया है। 2.4 विवादित फैसले और आदेश से व्यथित और असंतुष्ट महसूस करते हुए, मूल रिट याचिकाकर्ता-पीड़ित ने वर्तमान अपील को प्राथमिकता दी है।

ग

3. अपीलार्थी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील श्री महेश जेठमलानी ने जोरदार तरीके से कहा कि राज्य की जांच एजेंसी द्वारा पूरी जांच ढोंग और लापरवाही से की गई क्योंकि अभियुक्तों में से एक राज्य का प्रभावशाली मंत्री था।

डी.

3.1 यह प्रस्तुत किया जाता है कि इस तथ्य के बावजूद कि श्री जितेंद्र आव्हाड, मंत्री और उनके अन्य लोगों का नाम प्राथमिकी में खुलासा किया गया था और अपहरण और गंभीर चोट पहुंचाने का एक स्पष्ट मामला आरोप लगाया गया था, मंत्री, श्री जितेंद्र आव्हाड और उनके अन्य लोगों के खिलाफ कोई प्राथमिकी दर्ज नहीं की गई थी। यह प्रस्तुत किया जाता है कि लंबित रिट याचिका में उच्च न्यायालय द्वारा विभिन्न आदेश पारित किए जाने और माननीय उच्च न्यायालय द्वारा जांच की निगरानी करने के बाद ही आरोप पत्र/पूरक आरोप पत्र दायर किया गया और घटना के दो साल की अवधि के बाद श्री जितेंद्र अवध को पूरक आरोप पत्र में आरोपी के रूप में प्रस्तुत किया गया। 3.2 यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि आरोप पत्र भी कम अपराधों के साथ दायर किया जाता है, जैसे कि धारा 324 और 365 के तहत अपराध और केवल अन्य कम अपराधों के लिए। यह प्रस्तुत किया जाता है कि धारा 326 (गंभीर चोट) के तहत अपराध के लिए एक स्पष्ट मामला बनाए जाने के बावजूद, जो तस्वीरों से स्थापित होता है और धारा 367 के तहत अपराध के लिए अपहरण का एक स्पष्ट मामला है, आईपीसी की धारा 367 के साथ पठित धारा 326 के तहत अपराधों के लिए आरोप पत्र दायर नहीं किया गया है।

ई.

च

जी.

3.3 यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि अपीलार्थी के मोबाइल के सीडीआर के रूप में प्रासंगिक साक्ष्य के साथ-साथ

एच.

62

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

संबंधित अभियुक्तों को एकत्र नहीं किया गया है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि सीसीटीवी फुटेज भी एकत्र नहीं किया गया है, जो जांच और आरोपी व्यक्तियों के खिलाफ आरोपों की जड़ तक जाता है। 3.4 यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि जैसा कि इस न्यायालय द्वारा देखा और अभिनिर्धारित किया गया है

धरम पाल बनाम हरियाणा राज्य और अन्य के मामले में, (2016) 4

एस. सी. सी. 160 (पैरा 25), संवैधानिक न्यायालयों की परिकल्पना नए सिरे से, नए सिरे से या फिर से जांच का आदेश देने की शक्ति के साथ की गई है और जैसा कि देखा और अभिनिर्धारित किया गया है कि मुकदमे की शुरुआत और कुछ गवाहों की परीक्षा उक्त संवैधानिक शक्ति का प्रयोग करने के लिए एक पूर्ण बाधा नहीं हो सकती है, जो एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण जांच सुनिश्चित करने के लिए है।

3.5 यह अपीलार्थी की ओर से पेश हुए विद्वान वरिष्ठ वकील श्री जेठमलानी द्वारा आगे प्रस्तुत किया गया है कि जैसा कि देखा और अभिनिर्धारित किया गया है

ग

भारती तमांग बनाम भारत संघ के मामले में इस न्यायालय द्वारा और

अन्य, (2013) 15 एस. सी. सी. 578, कम/असंतोषजनक जाँच के मामले में, अभियोजन का प्रभावी संचालन सुनिश्चित करना न्यायालयों का कर्तव्य है और अदालतों को कमी/असंतोषजनक जाँच के कारण असाधारण परिस्थितियों में पुनः जाँच का निर्देश देने की शक्तियाँ हैं।

डी.

3.6 यह प्रस्तुत किया जाता है कि जैसा कि उक्त निर्णय में देखा और अभिनिर्धारित किया गया है कि यदि जांच या अभियोजन में कमी दिखाई देती है या वास्तविकताओं को छिपाने या स्पष्ट कमी को कवर करने की कोशिश करने वाले घूंघट को उठाकर महसूस किया जा सकता है, तो अदालतों को कानून के ढांचे के भीतर उचित रूप से लोहे के हाथ से निपटना होगा। यह प्रस्तुत किया जाता है कि यह आगे देखा जाता है कि यह सुनिश्चित करना न्यायालय का कर्तव्य है कि पूर्ण और भौतिक तथ्यों को रिकॉर्ड पर लाया जाए ताकि न्याय की विफलता न हो। उन्होंने उक्त निर्णय के अनुच्छेद 41 में इस न्यायालय द्वारा की गई टिप्पणियों पर भरोसा किया है।

ई.

च

3.7 अपीलार्थी की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ वकील श्री जेठमलानी ने आगे कहा कि राज्य ने भी अब जवाबी हलफनामे में विशेष रूप से स्वीकार किया है कि धारा 173 (8) के तहत न्याय के हित में कुछ प्रासंगिक और भौतिक पहलुओं पर कुछ और जांच आवश्यक/आवश्यक है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि अब राज्य ने विशेष रूप से कुछ भौतिक पहलुओं पर जांच में चूक को स्वीकार किया है और राज्य के अनुसार अब इस न्यायालय के समक्ष जवाबी हलफनामे के पैराग्राफ 4 में उल्लिखित प्रासंगिक पहलुओं पर आगे की जांच की आवश्यकता है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि इसलिए अब राज्य की राज्य/जांच एजेंसी को ए के प्रयोग में आगे की जांच करने की अनुमति दी जा सकती है।

जी.

एच.

63

अनंत थानूर कर्मसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

आपराधिक न्याय के प्रशासन को आगे बढ़ाने में पीड़ित को पूर्ण न्याय देने की संवैधानिक शक्तियाँ।

4. राज्य की ओर से उपस्थित विद्वान सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता ने राज्य/जांच एजेंसी द्वारा पहले की गई जांच में कुछ खामियों/खामियों की ओर इशारा किया है और जवाबी हलफनामे के पैराग्राफ 4 से खामियों को उजागर किया है और निष्पक्ष रूप से स्वीकार किया है और यहां तक कि जवाबी हलफनामे में कहा है कि धारा 173 (8) Cr.P.C के तहत शक्तियों के प्रयोग में आगे की जांच की आवश्यकता/आवश्यकता है।

5. श्री शेखर नाफडे और डॉ. अभिषेक मनु सिंघवी, विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता प्रतिवादी संख्या 3 और 5 की ओर से पेश हुए और वर्तमान अपील का विरोध किया।

ग

5.1 संबंधित प्रतिद्वंद्वी प्रतिवादी संख्या 3 और 5 की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा यह जोरदार रूप से प्रस्तुत किया जाता है कि इस तरह से जांच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने के लिए कोई मामला नहीं बनाया गया है, विशेष रूप से जब, अब, न केवल जांच समाप्त हो गई है और आरोप पत्र दायर किए गए हैं, बल्कि उसके बाद भी ट्रायल कोर्ट द्वारा आरोप भी तैयार किए गए हैं। यह प्रस्तुत किया जाता है कि इसलिए आरोप तय करने पर, यह कहा जा सकता है कि मुकदमा शुरू हो गया है और इसलिए, अनुरोध के अनुसार मामले को सी. बी. आई. को स्थानांतरित नहीं किया जा सकता है। 5.2 यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि अन्यथा भी पहली बार गंभीर चोटों का आरोप लगाया जाता है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि अपीलार्थी को कथित रूप से हुई गंभीर चोटों के आरोप का किसी भी रिकॉर्ड या दस्तावेज़ द्वारा समर्थन नहीं किया गया है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि अपीलार्थी ने कभी यह आरोप नहीं लगाया कि उसे लगी चोटों के कारण फ्रैक्चर हुआ है।

डी.

ई.

च

5.3 यह प्रस्तुत किया जाता है कि 06.04.2020 पर अपीलार्थी द्वारा दर्ज की गई एफ़. आई. आर. चोटों के गंभीर होने और किसी भी फ्रैक्चर के कारण होने के बारे में पूरी तरह से चुप है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि पुलिस द्वारा दायर आरोप पत्र में यह भी कहा गया है कि अपीलार्थी की शिवाजी अस्पताल में जांच की गई थी और चिकित्सा रिपोर्ट प्राप्त हुई थी जिसमें सूचित किया गया था कि चोटों की प्रकृति सरल है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि अपीलार्थी द्वारा 10.04.2020 पर पुलिस को दिया गया अतिरिक्त बयान भी किसी भी फ्रैक्चर के कारण होने या गंभीर प्रकृति की चोटों के पहलू पर चुप है।

जी.

5.4 यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय ने भी पैरा 16, 17 और 20 में इस तथ्य को स्पष्ट रूप से नोट किया है कि अपीलार्थी

एच.

64

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

फ्रैक्चर या चोटों के गंभीर होने का सबूत देने वाला कोई भी चिकित्सा प्रमाण पत्र या दस्तावेज प्रस्तुत करने में विफल रहा और फैसला सुनाया कि चोटें सरल प्रकृति की हैं, जो आरोप पत्र के साथ दायर चिकित्सा रिपोर्ट से स्पष्ट है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि, इसलिए, इस आरोप में कोई सार नहीं है कि गंभीर चोट/चोट के उच्च अपराध का संकेत देने में निवेश एजेंसी की ओर से कोई कमी है।

5.5 यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि जहां तक सीसीटीवी फुटेज की बरामदगी का संबंध है, वह पहले ही बरामद कर लिया गया है, बंद कर दिया गया है और विद्वान मजिस्ट्रेट की हिरासत में है।

5.6 संबंधित निजी प्रतिवादी संख्या 3 और 5-मूल अभियुक्त की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा यह जोरदार रूप से प्रस्तुत किया जाता है कि एक बार आरोप पत्र दायर किए जाने के बाद, आरोप तय किए जाते हैं और मुकदमा शुरू हो जाता है, आगे की जांच की अनुमति नहीं दी जा सकती है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि वर्तमान मामले में, पहला आरोप पत्र 07.12.2020 पर दायर किया गया है और उसके बाद पूरक आरोप पत्र 28.7.2021 और 14.10.2021 पर दर्ज किया गया है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि एफ़. आई. आर. सं. 119/2020 में आरोप पत्र भी संबंधित मजिस्ट्रेट को 13.09.2022 पर प्रस्तुत किया गया है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि वर्तमान मामले में, संबंधित न्यायालय द्वारा अभियुक्त संख्या 1 से 12 के खिलाफ 20.08.2021 पर और 28.11.2022 पर अभियुक्त संख्या 13 के खिलाफ आरोप तय किए गए हैं और इस प्रकार, मुकदमा शुरू हो गया है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि चूंकि जांच पूरी हो चुकी है, इसलिए आरोप पत्र दायर किए गए हैं और आरोप तैयार किए गए हैं, इसलिए अपीलार्थी द्वारा पुनः जांच की मांग करना कानून के तहत पूरी तरह से अस्वीकार्य है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि आरोप तय होने पर, धारा 173 (8) का संचालन बंद हो जाता है क्योंकि परीक्षण शुरू हो गया है जैसा कि देखा गया है।

ग

डी.

ई.

और विनूभाई हरिभाई मालवीय और अन्य मामलों में इस न्यायालय द्वारा अभिनिर्धारित। बनाम गुजरात राज्य और अन्न, (2019) 17 एस. सी. सी. 1 (पैरा 42)।

च

5.7 यह प्रस्तुत किया जाता है कि जैसा कि इस न्यायालय द्वारा देखा और अभिनिर्धारित किया गया है

रामा चौधरी बनाम बिहार राज्य का मामला, (2009) 6 एस. सी. सी. 346

कि धारा 173 की उप-धारा (2) और उप-धारा (8) के स्पष्ट अध्ययन से यह स्पष्ट है कि जांच पूरी होने पर उप-धारा (2) के तहत पुलिस रिपोर्ट प्रस्तुत करने के बाद भी, पुलिस को धारा 173 की उप-धारा (8) के तहत "आगे" जांच करने का अधिकार है, लेकिन "नए सिरे से जांच" या "फिर से जांच" करने का नहीं।

जी.

5.8 यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि जहाँ तक अपीलार्थी की जाँच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने की प्रार्थना का संबंध है, जैसा कि इस न्यायालय द्वारा निर्णयों के आधार पर देखा और अभिनिर्धारित किया गया है, सी. बी. आई. को जाँच का हस्तांतरण ए है।

एच.

65

अनंत थानूर कर्मूसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

केवल दुर्लभतम मामलों में ही किया जाना चाहिए। हिमांशु कुमार और अन्य के मामले में इस अदालत के फैसले पर भरोसा रखा गया है। बनाम।

छत्तीसगढ़ राज्य और अन्य, 2022 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 884 (पैरा 44)

आगे)। यह प्रस्तुत किया जाता है कि जैसा कि इस न्यायालय द्वारा अवलोकन और अभिनिर्धारित किया गया है

पश्चिम बंगाल राज्य और अन्य का मामला। बनाम लोकतांत्रिक अधिकारों की सुरक्षा समिति, पश्चिम बंगाल और अन्य, (2010) 3 एस. सी. सी. 571,

जाँच के हस्तांतरण की शक्ति का प्रयोग संयम से, सावधानी से और असाधारण परिस्थितियों में किया जाना चाहिए। यह प्रस्तुत किया जाता है कि वर्तमान मामले में आरोप पत्र के आधार पर, निचली अदालत ने आरोप तय किए हैं, अब जांच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने के लिए कोई असाधारण मामला नहीं बनाया गया है।

ग

5.9 अब, जहाँ तक इस माननीय न्यायालय के समक्ष दायर जवाबी हलफनामे में राज्य द्वारा अपने रुख में बदलाव का संबंध है, यह प्रस्तुत किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के समक्ष राज्य ने पूरे समय जांच का बचाव किया था। यह प्रस्तुत किया जाता है कि सिर्फ इसलिए कि राज्य में राजनीतिक व्यवस्था बदल गई है, अब राज्य ने इस माननीय न्यायालय के समक्ष एक हलफनामा दायर किया है जिसमें बिना किसी ठोस सबूत के मामले में आगे की जांच की मांग की गई है और इस तरह यह कानून में अस्वीकार्य है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि इस माननीय न्यायालय ने बार-बार यह निर्णय दिया है कि सरकारें बदलती हैं लेकिन राज्य वही रहता है। राज्य के मामले में इस न्यायालय के फैसलों पर भरोसा रखा जाता है।

डी.

कर्नाटक और अन्न। बनाम अखिल भारतीय निर्माता संगठन और अन्य, (2006) 4 एस. सी. सी. 683 (पैरा 57); तमिलनाडु राज्य और अन्य। बनाम श्याम सुंदर और अन्य, (2011) 8 एस. सी. सी. 737 (पैरा 35) और जल महल रिसॉर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड बनाम के. पी. शर्मा और अन्य, (2014) 8 एस. सी. सी. 804 (पैरा 89)।

ई.

5.10 अब, जहाँ तक राज्य के शपथ पत्र में दायर किए गए चार्ट का संबंध है, जिसमें राज्य ने अभियुक्त संख्या 13 के खिलाफ दर्ज पिछले मामलों का उल्लेख किया है, यह प्रस्तुत किया जाता है कि राज्य इस माननीय न्यायालय को पूर्वाग्रहित करने की कोशिश कर रहा है क्योंकि उन मामलों की सही स्थिति राज्य द्वारा इस न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत नहीं की गई है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि उक्त 24 मामलों में से 18 मामलों को या तो राज्य द्वारा वापस ले लिया गया है या संबंधित विद्वत न्यायालयों द्वारा निपटाया गया है। यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि एक महिला द्वारा दायर एक मामले में, आरोपी संख्या 13 को अदालत ने अग्रिम जमानत दे दी है और जिस महिला ने आरोपी संख्या 13 के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है, वह खुद आईपीसी और पॉक्सो अधिनियम के तहत प्राथमिकी का सामना कर रही है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि इसलिए राज्य द्वारा दायर काउंटर में लगाए गए आरोपों में उनके खिलाफ दर्ज पिछले मामलों का उल्लेख किया गया है।

च

जी.

एच.

66

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

अभियुक्त संख्या 13 और कुछ नहीं बल्कि एक राजनीतिक प्रतिशोध है और यह अनुरोध किया जाता है कि वर्तमान मामले में इस मुद्दे पर विचार करते समय इस पर विचार न किया जाए। 5.11 उपरोक्त प्रस्तुतियाँ करते हुए, वर्तमान अपील को खारिज करने का अनुरोध किया जाता है।

6. संबंधित पक्षों की ओर से उपस्थित विद्वान वकील को विस्तार से सुना।

7. विवादित निर्णय और आदेश द्वारा, उच्च न्यायालय ने अपीलार्थी की ओर से जांच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने के लिए की गई प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया है और 2020 की एफ. आई. आर. संख्या 120 की आगे की जांच/पुनः जांच के लिए योग्यता के आधार पर अनुरोध को भी अस्वीकार कर दिया है और साथ ही मुख्य रूप से इस आधार पर कि एक बार जांच के बाद आरोप पत्र दायर किया जाता है और आरोप तैयार किए जाते हैं, मजिस्ट्रेट के पास आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच का आदेश देने का कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है।

ग

7.1 इसलिए, इस न्यायालय के विचार के लिए प्रस्तुत किया गया संक्षिप्त प्रश्न है:

डी.

“क्या मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, उच्च न्यायालय ने जांच को सी. बी. आई. को हस्तांतरित करने से इनकार कर दिया है और आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच का आदेश देने से इनकार कर दिया है?”

7.2 उपरोक्त मुद्दे पर विचार करते हुए और संबंधित पक्षों की ओर से की गई उपरोक्त दलीलों की सराहना करते हुए, जांच को सी. बी. आई. जैसी किसी अन्य एजेंसी को स्थानांतरित करने की अदालतों की शक्ति और आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच का आदेश देने के लिए संवैधानिक अदालतों की शक्तियों पर इस न्यायालय के कुछ निर्णयों को संदर्भित करने की आवश्यकता है।

ई.

च

7.3 हिमांशु कुमार और अन्य (ऊपर) के मामले में, यह

न्यायालय के पास किसी अन्य स्वतंत्र एजेंसी को जांच हस्तांतरित करने की न्यायालय की शक्ति पर विचार करने का अवसर था। इस मुद्दे पर निर्णयों के आधार को ध्यान में रखने के बाद, यह दोहराया जाता है कि जांच केवल "दुर्लभ और असाधारण मामलों" में ही सी. बी. आई. को हस्तांतरित की जा सकती है। पैराग्राफ 44 से 53 में इसे इस प्रकार मनाया और अभिनिर्धारित किया गया है:- "44. अब यह तय कानून है कि यदि कोई नागरिक, जो उच्च सरकारी अधिकारियों या प्रभावशाली व्यक्तियों के खिलाफ अपने कानूनी या मौलिक अधिकारों के उल्लंघन को प्रभावित करने वाले संज्ञेय अपराध का आरोप लगाते हुए किसी आपराधिक मामले में वास्तविक रूप से शिकायतकर्ता है, तो अदालत के समक्ष उक्त कथित अपराध की जांच के निर्देश के लिए प्रार्थना करता है।

जी.

एच.

67

अनंत थानूर कर्मसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

सी. बी. आई. द्वारा इस तरह की प्रार्थना केवल पूछने पर नहीं की जानी चाहिए। पश्चिम राज्य के मामले में इस न्यायालय की एक संविधान पीठ

बंगाल बनाम लोकतांत्रिक अधिकारों के संरक्षण समिति, पश्चिम

(2010) 3 एस. सी. सी. 571 में रिपोर्ट किए गए बंगाल ने निम्नलिखित टिप्पणियों को उन स्थितियों की ओर इशारा करते हुए किया है जहां सी. बी. आई. द्वारा जांच के लिए अनुरोध की अनुमति दी जानी चाहिए:

"70.... जहां तक किसी मामले में जांच करने के लिए सी. बी. आई. को निर्देश जारी करने का सवाल है, हालांकि यह तय करने के लिए कोई कठोर दिशानिर्देश निर्धारित नहीं किए जा सकते हैं कि ऐसी शक्तियों का प्रयोग किया जाना चाहिए या नहीं, लेकिन बार-बार यह दोहराया गया है कि ऐसा आदेश नियमित रूप से या केवल इसलिए पारित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि किसी पक्ष ने स्थानीय लोगों के खिलाफ कुछ आरोप लगाए हैं।

ग

पुलिस। इस असाधारण शक्ति का प्रयोग संयम, सावधानी और असाधारण परिस्थितियों में किया जाना चाहिए जहां विश्वसनीयता प्रदान करना और जांच में विश्वास पैदा करना आवश्यक हो जाता है या जहां घटना के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव हो सकते हैं या जहां पूर्ण न्याय करने और मौलिक अधिकारों को लागू करने के लिए ऐसा आदेश आवश्यक हो सकता है। नहीं तो सीबीआई करेगी।

डी.

बड़ी संख्या में मामलों और सीमित संसाधनों के साथ, गंभीर मामलों की ठीक से जांच करना मुश्किल हो सकता है और इस प्रक्रिया में असंतोषजनक जांच के साथ अपनी विश्वसनीयता और उद्देश्य खो सकता है।"

ई.

(जोर दिया गया) 45। उपरोक्त निर्णय में यह भी बताया गया था कि

सचिव, लघु सिंचाई और ग्रामीण इंजीनियरिंग में एक ही अदालत

च

सर्विसेज, यू. पी. बनाम सहंगू राम आर्य, (2002) 5 एस. सी. सी. 521 ने कहा था कि सी. बी. आई. द्वारा जांच का निर्देश देने वाला आदेश तभी पारित किया जाना चाहिए जब उच्च न्यायालय, अभिलेख पर सामग्री पर विचार करने के बाद, इस निष्कर्ष

पर पहुंचे कि ऐसी सामग्री सी. बी. आई. या किसी अन्य समान एजेंसी द्वारा जाँच की मांग करने वाले प्रथम दृष्टया मामले का खुलासा करती है।

जी.

46. एक उपयुक्त मामले में जब न्यायालय को लगता है कि पुलिस अधिकारियों द्वारा जांच उचित दिशा में नहीं है, और मामले में पूर्ण न्याय करने के लिए और यदि उच्च पुलिस अधिकारी कथित अपराध में शामिल हैं, तो अदालत को ऐसी परिस्थितियों में जांच को किसी को सौंपना उचित हो सकता है।

एच.

68

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

सी. बी. आई. जैसी स्वतंत्र एजेंसी। अब तक यह अच्छी तरह से तय हो गया है कि आरोप पत्र दाखिल करने के बाद भी अदालत को एक उचित मामले में जांच को सी. बी. आई. जैसी स्वतंत्र एजेंसी को सौंपने का अधिकार है।

47. भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 और 226 के तहत संवैधानिक न्यायालयों की असाधारण शक्ति का उपयोग बहुत सावधानी के साथ किया जाना चाहिए जैसा कि इस न्यायालय द्वारा रेखांकित किया गया है।

लोकतांत्रिक अधिकारों के संरक्षण के लिए समिति के मामले में,

पश्चिम बंगाल (ऊपर), जैसा कि ऊपर कहा गया है, यह देखते हुए कि हालांकि इस संबंध में कोई कठोर दिशानिर्देश निर्धारित नहीं किए जा सकते हैं, फिर भी यह रेखांकित किया गया कि इस तरह के आदेश को नियमित रूप से या केवल इसलिए पारित नहीं किया जा सकता है क्योंकि पक्षों ने स्थानीय पुलिस के खिलाफ कुछ आरोप लगाए हैं और असाधारण परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है जहां जांच में विश्वसनीयता प्रदान करना और विश्वास पैदा करना आवश्यक हो जाता है या जहां घटना के राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव हो सकते हैं या जहां पूर्ण न्याय करने और मौलिक अधिकारों को लागू करने के लिए ऐसा आदेश आवश्यक हो सकता है। हम इस तथ्य से अवगत हैं कि यद्यपि उचित, निष्पक्ष, निष्पक्ष और प्रभावी जांच की कमी की संतुष्टि, जिससे इसकी विश्वसनीयता और विश्वसनीयता का क्षरण होता है, आगे की जांच या पुनः जांच के निर्देश के लिए पूर्व शर्त है, लेकिन वास्तव में आरोप पत्र प्रस्तुत करना या मुकदमा लंबित होना, किसी भी तरह से निषेधात्मक बाधा नहीं हो सकती है। प्रासंगिक तथ्यों और परिवेशक परिस्थितियों का एकल मूल्यांकन और विश्लेषण किया जाना चाहिए ताकि सच्चाई को उजागर करने और पक्षों को न्याय दिलाने के लिए आगे की जांच या पुनः जांच की आवश्यकता तय की जा सके। न्यायालय की प्रमुख चिंता और प्रयास सत्य तथ्यों के आधार पर न्याय प्राप्त करना होना चाहिए, जिसका पता एक प्रतिबद्ध, संकल्पित और एक सक्षम जांच एजेंसी के माध्यम से लगाया जाना चाहिए।

ग

डी.

ई.

च

48. उपरोक्त सिद्धांत को केवी में दोहराया गया है।

राजेन्द्रन बनाम पुलिस अधीक्षक, सी. बी. सी. आई. डी. दक्षिण क्षेत्र

जी.

चेन्नई, (2013) 12 एससीसी 480। डॉ. बी. एस. चौहान, जे. ने इस न्यायालय की तीन-न्यायाधीशों की पीठ की ओर से बोलते हुए कहा:

“13. ...इस न्यायालय ने बार-बार इस मुद्दे पर विचार किया है कि किन परिस्थितियों में जांच को राज्य की जांच एजेंसी से किसी अन्य स्वतंत्र एजेंसी को स्थानांतरित किया जा सकता है।

एच.

69

अनंत थानूर कर्मूसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

सी. बी. आई. जैसी जाँच एजेंसी। यह अभिनिर्धारित किया गया है कि इस तरह की जांच को स्थानांतरित करने की शक्ति दुर्लभ और असाधारण मामलों में होनी चाहिए जहां अदालत पक्षों के बीच न्याय करने और जनता के मन में विश्वास पैदा करने के लिए इसे आवश्यक समझती है, या जहां राज्य पुलिस द्वारा जांच में विश्वसनीयता का अभाव है और यह "निष्पक्ष, ईमानदार और पूर्ण जांच" के लिए आवश्यक है, और विशेष रूप से, जब राज्य एजेंसियों के निष्पक्ष कामकाज में जनता का विश्वास बनाए रखना अनिवार्य है।...

49. इस सिद्धांत के बारे में विस्तार से बताते हुए, इस न्यायालय ने आगे कहा: “17. ... न्यायालय केवल दुर्लभ और असाधारण मामलों में राज्य की जाँच एजेंसी से सी. बी. आई. जैसी किसी अन्य स्वतंत्र जाँच एजेंसी को जाँच हस्तांतरित करने के लिए अपनी संवैधानिक शक्तियों का प्रयोग कर सकता है। जैसे कि जहां राज्य प्राधिकरणों के उच्च अधिकारी शामिल हैं, या आरोप स्वयं जांच एजेंसी के शीर्ष अधिकारियों के खिलाफ है जिससे उन्हें जांच को प्रभावित करने की अनुमति मिलती है, और आगे यह कि न्याय करना और जांच में विश्वास पैदा करना इतना आवश्यक है या जहां जांच प्रथम दृष्टया दागी/पक्षपाती पाई जाती है।”

ग

डी.

50. अदालत ने दोहराया कि जांच केवल "दुर्लभ और असाधारण मामलों" में ही सी. बी. आई. को हस्तांतरित की जा सकती है। एक कारक जिस पर अदालतें विचार कर सकती हैं, वह यह है कि इस तरह का स्थानांतरण राज्य एजेंसियों के निष्पक्ष कामकाज में जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए "अनिवार्य" है।" इस अवलोकन को संरक्षण समिति के मामले में संविधान पीठ द्वारा की गई टिप्पणियों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

ई.

लोकतांत्रिक अधिकार, पश्चिम बंगाल (ऊपर), कि केवल आरोप

च

पुलिस के खिलाफ जांच को स्थानांतरित करने के लिए पर्याप्त आधार नहीं है।

51. रोमिला थापर बनाम भारत संघ, (2018) 10 एस. सी. सी. 753 में, हममें से एक, ए. एम. खानविलकर, जे. ने इस न्यायालय की तीन-न्यायाधीशों की पीठ के लिए बोलते हुए (डॉ. डी. वाई. चंद्रचूड़, जे. असहमति जताते हुए) इस सिद्धांत को निर्धारित करने वाले उदाहरणों की एक पंक्ति में उक्ति का उल्लेख किया कि अभियुक्त का "जांच एजेंसी की नियुक्ति के मामले में कोई कहना नहीं है।" इस सिद्धांत को दोहराते हुए, इस न्यायालय ने नर्मदा बाई बनाम गुजरात राज्य मामले में अपने पहले के फैसलों पर भरोसा किया।

जी.

(2011) 5 एस. सी. सी. 79, संजीव राजेंद्र भट्ट बनाम भारत संघ,

एच.

(2016) 1 एससीसी 1, ई. शिवकुमार बनाम भारत संघ, (2018) 7 एससीसी

70 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 3 एस. सी. आर.

365, और डिवाइन रिट्रीट सेंटर बनाम केरल राज्य, (2008) 3 एससीसी

542. इस न्यायालय ने टिप्पणी की: "30... इस न्यायालय का सुसंगत दृष्टिकोण यह है कि अभियुक्त जाँच एजेंसी को बदलने या अदालत की निगरानी में जाँच सहित किसी विशेष तरीके से जाँच करने के लिए नहीं कह सकता है।"

52. इस न्यायालय द्वारा सी. बी. आई. बनाम राजेश गांधी, 1997 सी. आर. आई. एल. जे. 63 में यह अभिनिर्धारित किया गया है कि कोई भी इस बात पर जोर नहीं दे सकता कि किसी अपराध की जाँच किसी विशेष एजेंसी द्वारा की जाए। हम उपरोक्त निर्णय के दृष्टिकोण से पूरी तरह सहमत हैं। एक पीड़ित व्यक्ति केवल यह दावा कर सकता है कि वह जिस अपराध का आरोप लगाता है, उसकी ठीक से जांच की जाए, लेकिन उसे यह दावा करने का कोई अधिकार नहीं है कि उसकी जांच उसकी पसंद की किसी विशेष एजेंसी द्वारा की जाए।

ग

53. इस न्यायालय के उदाहरणों से जो कानून का सिद्धांत उभरता है, वह यह है कि जांच को स्थानांतरित करने की शक्ति का उपयोग "संयम से" और केवल "असाधारण परिस्थितियों में" किया जाना चाहिए। याचिकाकर्ता द्वारा आग्रह की गई याचिका का आकलन करते हुए कि जांच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित किया जाना चाहिए, हम उस असाधारण शक्ति के प्रयोग के लिए इस न्यायालय द्वारा निर्धारित मापदंडों द्वारा निर्देशित हैं।" 7.4 ऊपर चर्चा की गई कानून की स्थिति और मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, हमारी राय है कि उच्च न्यायालय ने जांच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने से इनकार करने में कोई त्रुटि नहीं की है। यहां तक कि अपीलार्थी की ओर से पेश विद्वान वकील ने भी इस तरह की प्रार्थना पर जोर नहीं दिया है। जहां तक जांच को सी. बी. आई. को हस्तांतरित करने से इनकार करने का संबंध है, हम उच्च न्यायालय द्वारा लिए गए दृष्टिकोण से पूरी तरह सहमत हैं।

डी.

ई.

8. अब, जहां तक आरोप पत्र दायर किए जाने और आरोप बनाए जाने के बाद भी आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच का आदेश देने की संवैधानिक अदालतों की शक्ति का संबंध है, निम्नलिखित निर्णयों को संदर्भित करने की आवश्यकता है:- - प.व. 98 का कथन भी उपयोगी रूप से पुनः इस प्रकार पेश किया जा सकता है -

च

8.1 भारती तमांग (ऊपर) के मामले में, लेने के बाद

बाबूभाई बनाम के मामले में इस न्यायालय के निर्णयों पर विचार करें।

जी.

गुजरात राज्य, (2010) 12 एस. सी. सी. 254 (पैरा 40 और 42) और

राम जेठमलानी बनाम भारत संघ (2011) 8 एस. सी. सी. 1 के मामले में इस न्यायालय के बाद के निर्णय और इस मुद्दे पर अन्य निर्णय, अंततः जो सिद्धांत निकाले गए हैं, वे इस प्रकार हैं:- ए.

एच.

अनंत थानूर कर्मूसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

“41. याचिकाकर्ता वकील के साथ-साथ उत्तरदाताओं के वकील द्वारा किए गए विभिन्न निर्णयों से निम्नलिखित सिद्धांतों को निकाला जा सकता है।

41.1. साक्ष्य की स्वीकार्यता की कसौटी इसकी प्रासंगिकता में निहित है।

41.2. जब तक कोई स्पष्ट या निहित संवैधानिक निषेध या अन्य कानून नहीं है, तब तक अवैध खोज या जब्ती के परिणामस्वरूप रखे गए साक्ष्य को बंद नहीं किया जा सकता है।

41.3. यदि जाँच या अभियोजन में कमी दिखाई देती है या वास्तविकताओं को छिपाने या स्पष्ट कमी को कवर करने की कोशिश करने वाले घूँघट को उठाकर महसूस किया जा सकता है, तो अदालतों को कानून के ढांचे के भीतर उचित रूप से लोहे के हाथ से निपटना होगा।

ग

41.4. यह सुनिश्चित करना अभियोजक का भी उतना ही कर्तव्य है जितना कि न्यायालय का कि पूर्ण और भौतिक तथ्यों को अभिलेख पर लाया जाए ताकि न्याय की विफलता न हो।

डी.

41.5. यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपराधिक अभियोजन बिना किसी कमी के चलाया जाए, उपयुक्त मामलों में यह न्यायालय विशेष जांच दल का गठन भी कर सकता है और केंद्र और राज्य सरकारों और अन्य अधिकारियों को उचित निर्देश भी दे सकता है कि वे वास्तविक दोषियों के खिलाफ मामला दर्ज करने और अभियोजन के प्रभावी संचालन के लिए इस तरह के विशेष रूप से गठित जांच दल को सभी आवश्यक सहायता दें।

ई.

41.6. आपराधिक अभियोजन को राज्य के अन्य उपकरणों के साथ या एक विशेष जांच दल का गठन करते समय, उच्च न्यायालय या यह न्यायालय भी अभियोजन के उचित संचालन को सुनिश्चित करने के लिए ऐसी जांच की निगरानी कर सकता है। 41.7. उचित मामलों में भले ही आरोप पत्र दायर किया गया हो, इस न्यायालय या यहां तक कि उच्च न्यायालय के लिए यह खुला है कि वह पूर्ण न्याय करने के लिए मामले की जांच सीबीआई या किसी अन्य स्वतंत्र एजेंसी को सौंपने का निर्देश दे।

च

जी.

41.8. असाधारण परिस्थितियों में न्यायालय आपराधिक न्याय की विफलता को रोकने के लिए और यदि आवश्यक समझा जाए तो नए सिरे से जाँच के लिए निर्देश दे सकता है।”

8.2 धरम पाल (ऊपर) के मामले में, लेने के बाद

एच.

इस बिंदु पर निर्णयों के कैटेना पर विचार करें, यह देखा और आयोजित किया जाता है

72

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

कि संवैधानिक अदालतें किसी अन्य जांच एजेंसी द्वारा आगे की जांच या जांच के लिए निर्देश दे सकती हैं। यह देखा गया है कि उद्देश्य यह है कि एक निष्पक्ष जांच और एक निष्पक्ष सुनवाई होनी चाहिए। यह देखा गया है कि निष्पक्ष सुनवाई तब तक काफी कठिन हो सकती है जब तक कि निष्पक्ष जांच न हो। यह आगे देखा और अभिनिर्धारित किया जाता है कि नए सिरे से, नए सिरे से या फिर से जाँच का आदेश देने की शक्ति संवैधानिक न्यायालयों में निहित होने के कारण, मुकदमे की शुरुआत और कुछ गवाहों की जाँच उक्त संवैधानिक शक्ति का प्रयोग करने के लिए एक पूर्ण बाधा नहीं हो सकती है जो एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण जाँच सुनिश्चित करने के लिए है। पैराग्राफ 24 और 25 में ऐसा मानते हुए और मानते हुए, इसका पालन और अभिनिर्धारित किया गया है:- “24. यहां यह ध्यान दिया जाए कि संवैधानिक अदालतें किसी अन्य जांच एजेंसी द्वारा आगे की जांच या जांच के लिए निर्देश दे सकती हैं। उद्देश्य यह है कि निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई होनी चाहिए। निष्पक्ष सुनवाई तब तक काफी कठिन हो सकती है जब तक कि निष्पक्ष जांच न हो। हम इस बात से पूरी तरह अवगत हैं कि किसी अन्य एजेंसी द्वारा आगे की जांच के लिए निर्देश बहुत कम समय में जारी किया जाना चाहिए, लेकिन इस मामले में दर्शाए गए तथ्य हमें उक्त शक्ति का प्रयोग करने के लिए मजबूर करते हैं। हम यह सोचने के लिए तैयार हैं कि न्याय का उद्देश्य यह आदेश देता है कि पीड़ित, मृतक के पति के कारण का जवाब दिया जाना चाहिए ताकि न्याय की विफलता से बचा जा सके। इसलिए, इस मामले में मामले का चरण शासी कारक नहीं हो सकता है। 25. हम आगे स्पष्ट कर सकते हैं। नए सिरे से, नए सिरे से या फिर से जांच का आदेश देने की शक्ति संवैधानिक अदालतों में निहित होने के कारण, मुकदमे की शुरुआत और कुछ गवाहों की जांच उक्त संवैधानिक शक्ति का प्रयोग करने के लिए एक पूर्ण बाधा नहीं हो सकती है जो एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण जांच सुनिश्चित करने के लिए है। यह कभी नहीं भुलाया जा सकता है कि जैसे महान महासागर की केवल एक ही परीक्षा होती है, नमक की परीक्षा, वैसे ही न्याय का भी एक ही स्वाद होता है, बिना किसी भेदभाव के लोगों के संकट का जवाब देने का स्वाद। हम जल्दबाजी में यह भी कह सकते हैं कि अगर किसी नागरिक को लगता है कि किसी गरीब व्यक्ति द्वारा कही गई सच्चाई को शायद ही कभी सुना जाता है तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में विनाश की संभावना है। बिना किसी कारण के यह नहीं कहा गया है कि सूरज उगता है और सूरज डूबता है, प्रकाश और अंधेरा आता है और वसंत आता है और चला जाता है, यहाँ तक कि समय की गति भी मनोरंजक होती है लेकिन न्याय होने पर सच्चाई बनी रहती है और चमकती है। सत्य को बनाए रखना एक अदालत का बाध्यकारी कर्तव्य है और सत्य का अर्थ है छल की अनुपस्थिति, धोखाधड़ी की अनुपस्थिति और आपराधिक जांच में एक वास्तविक और निष्पक्ष जांच, न कि एक ऐसी जांच जो खुद को एक नकली ए के रूप में प्रकट करती है।

ग

डी.

ई.

च

जी.

एच.

73

अनंत थानूर कर्मूसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

एक. यह स्वीकार्य नहीं है। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि निष्पक्ष और सच्ची जांच अनिवार्य है। यदि जाँच में संकेत या अवतलता है, तो क्या जाँच में "विश्वास" को सुसमाचार सत्य माना जा सकता है? क्या इसमें वास्तविक जाँच की पवित्रता या शुद्धता होगी? यदि जाँच के संबंध में कोई गंभीर संदेह उत्पन्न होता है, तो क्या एक संवैधानिक अदालत को अपने हाथ बंद कर इस प्रस्ताव को स्वीकार करना चाहिए कि मुकदमा शुरू हो गया है, मामला इससे परे है? यह अभियोजन पक्ष का "दौरा करने का बल" है और अगर हम खुद को ऐसा कहने की अनुमति देते हैं तो यह "उचित निर्णय" बन गया है, लेकिन हमारे विचार में संवैधानिक न्यायालयों के प्रभुत्व को अच्छे या विवादास्पद तरीके से दबाया या दबाया नहीं जा सकता है। बेशक, संदेह का किसी प्रकार का आधार और आधार होना चाहिए, न कि किसी की बेतुकी कल्पना का अनुमान। कोई सोच सकता है कि एक निष्पक्ष जांच एक नासिका होगी लेकिन ऐसा नहीं करना पॉसम खेलने जैसा होगा। जैसा कि पहले कहा गया है, तथ्य स्वयं स्पष्ट हैं और दुखी नायक, निचले वर्ग का व्यक्ति है। उसे यह भावना नहीं रखनी चाहिए कि वह "कानून के तहत अनाथ" है।"

ਡੀ.

विन्‍भाई हरिभाई मालवीय और अन्‍य (ऊपर) के मामले में न्यायालय,

45.

च

जी.

एच.

409], समाज परिवर्तन समुद्र [समाज परिवर्तन]

समुद्र बनाम कर्नाटक राज्य, (2012) 7 एस. सी. सी. 407], विनय त्यागी [विनय त्यागी बनाम इरशाद अली, (2013) 5 एस. सी. सी. 762], और

(2014) 3 एस. सी. सी. 92; (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014)
 (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014)
 (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014)
 (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014)
 (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014)
 (2014) (2014) (2014) (2014) (2014) (2014)

(2014) 3 एस. सी. सी. 92] ने स्पष्ट रूप से कहा कि आपराधिक मुकदमा संज्ञान लेने के बाद शुरू नहीं होता है, बल्कि आरोप तय होने के बाद ही शुरू होता है। इस न्यायालय के हाल के फैसलों में जिस बात को कोई महत्व नहीं दिया गया है, वह है संविधान का अनुच्छेद 21 और यह तथ्य कि अनुच्छेद एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण जांच से कम की मांग नहीं करता है। यह कहना कि एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण जांच से यह निष्कर्ष निकलेगा कि पुलिस धारा 173 (8) के तहत मजिस्ट्रेट की मंजूरी के अधीन किसी अपराध की आगे की जांच करने की शक्ति बरकरार रखेगी, जब तक कि आरोप तय नहीं किए जाते हैं, लेकिन यह कि मजिस्ट्रेट का पर्यवेक्षी क्षेत्राधिकार अचानक मुकदमे से पहले की कार्यवाही के बीच में ही बंद हो जाता है, न्याय का उपहास होगा, क्योंकि कुछ मामले आगे की जांच के लिए पुकार कर सकते हैं ताकि एक निर्दोष व्यक्ति को गलत तरीके से आरोपी के रूप

में पेश नहीं किया जाए या कि एक प्रथम दृष्टया दोषी व्यक्ति को इस तरह नहीं छोड़ा जाए।मजिस्ट्रेट की शक्तियों के बारे में इस तरह के संकीर्ण और प्रतिबंधात्मक दृष्टिकोण के लिए कोई वारंट नहीं है, विशेष रूप से जब ऐसी शक्तियां दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 156 (1), धारा 2 (एच) और धारा 173 (8) के साथ पठित धारा 156 (3) के लिए पता लगाने योग्य हैं, जैसा कि ऊपर देखा गया है, और मुकदमा वास्तव में शुरू होने से पहले एक आपराधिक मामले की प्रगति के सभी चरणों में उपलब्ध होगा।यह न्याय के हित में भी होगा कि प्रत्येक मामले के तथ्यों के आधार पर स्वयं मजिस्ट्रेट द्वारा इस शक्ति का प्रयोग किया जाए।आगे की जाँच का आदेश दिया जाना चाहिए या नहीं, यह विद्वान मजिस्ट्रेट के विवेक के भीतर है जो प्रत्येक मामले के तथ्यों पर और कानून के अनुसार इस तरह के विवेक का प्रयोग करेगा।उदाहरण के लिए, यदि नए तथ्य सामने आते हैं जो कुछ व्यक्तियों को दोषी ठहराने या दोषमुक्त करने की ओर ले जाते हैं, तो सच्चाई पर पहुंचना और आपराधिक मामले में पर्याप्त न्याय करना आपराधिक कार्यवाही को समाप्त करने में और देरी से बचने की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है, जैसा कि माना गया था

ग

डी.

ई.

च

जी.

हसनभाई वलीभाई कुरैशी [हसनभाई वलीभाई कुरैशी बनाम।

गुजरात राज्य (2004) 5 एस. सी. सी. 347]।इसलिए, इस हद तक

कि अमृतभाई शंभूभाई पटेल [अमृतभाई शंभूभाई पटेल बनाम सुमनभाई कांतिभाई पटेल, (2017) 4 एस. सी. सी. 177],
अतुल राव [अतुल राव बनाम कर्नाटक राज्य, (2018) में निर्णय

एच.

75

अनंत थानूर कर्मूसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

क.

14 एस. सी. सी. 298] और बिकाश रंजन रूट [विकास रंजन रूट बनाम।

राज्य (एन. सी. टी. दिल्ली), (2019) 5 एस. सी. सी. 542] ने इसके विपरीत माना है कि वे खारिज किए गए हैं।यह जोड़ने की आवश्यकता नहीं है कि रणधीर सिंह राणा बनाम राज्य (दिल्ली प्रशासन) [(1997) 1 एस. सी. सी. 361] और रीता नाग बनाम डब्ल्यू. बी. राज्य [(2009) 9 एस. सी. सी. 129] भी खारिज कर दिए गए हैं।"

10. अब, जहाँ तक इस निर्णय पर निर्भरता है

रामा चौधरी (ऊपर) के मामले में अदालत ने उनकी ओर से भरोसा किया

प्रत्यर्थी-अभियुक्त का संबंध है, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उक्त निर्णय में, यह न्यायालय धारा 173 (8) और 173 (8) (2) के दायरे और पुलिस के "आगे की जाँच" के अधिकार पर विचार कर रहा था।यह देखा गया है कि पुलिस को "नई जांच" या "फिर से जांच" का कोई अधिकार नहीं है।हालाँकि, इस न्यायालय के पास संवैधानिक न्यायालयों की शक्तियों पर विचार करने का कोई अवसर नहीं था, जिन पर विचार किया जाता है और जिन पर विचार किया जाता है

ग

भारती तमांग (ऊपर) और धरम पाल (ऊपर) के मामले में।

11. धरम पाल (ऊपर) और भारती तमांग (ऊपर) के मामले में इस न्यायालय द्वारा निर्धारित कानून को लागू करते हुए और पूर्ण न्याय करने और निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई को आगे बढ़ाने के लिए, संवैधानिक अदालतें आरोप पत्र दायर होने और आरोप तय होने के बाद भी आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच का आदेश दे सकती हैं। यदि अभियुक्त की ओर से यह निवेदन और उच्च न्यायालय द्वारा यह भी कहा गया है कि एक बार आरोप पत्र दायर किए जाने और आरोप तैयार किए जाने के बाद, आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच के लिए कोई आदेश स्वीकार नहीं किया जा सकता है, तो उस मामले में, अभियुक्त यह देख सकता है कि किसी भी निष्पक्ष जांच/निष्पक्ष सुनवाई से बचने के लिए आरोप तैयार किए गए हैं। इससे न्याय का उपहास होगा।

डी.

ई.

12. उपरोक्त निर्णयों में इस न्यायालय द्वारा निर्धारित कानून और ऊपर निर्धारित कानून के सिद्धांत को लागू करते हुए, यह विचार करने की आवश्यकता है कि क्या कोई मामला आगे की जांच/नए सिरे से जांच/फिर से जांच/नए सिरे से जांच के लिए बनाया गया है या नहीं। 12.1 यह ध्यान दिया जाना आवश्यक है कि वर्तमान मामले में, प्राथमिकी में आरोप, शुरू से ही, आरोपी संख्या 13 के खिलाफ थे, जो उस समय उच्च पद पर बैठे कैबिनेट मंत्री थे। प्रासंगिक समय पर भी, जब राज्य पुलिस ने 2020 की संख्या 120 वाली प्राथमिकी की जांच की, तो पहले आरोप पत्र और दूसरे आरोप पत्र में आरोपी संख्या 13 का नाम नहीं था। यहाँ तक कि जाँच भी पूरी तरह से की गई थी। उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद ही वास्तविक जांच शुरू हुई

च

जी.

एच.

76

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

न्यायालय और उच्च न्यायालय द्वारा वर्तमान कार्यवाहियों में विभिन्न आदेश पारित करने के बाद। एफ. आई. आर. में आरोप बहुत गंभीर थे जिनमें मौजूदा कैबिनेट मंत्री द्वारा शक्तियों का दुरुपयोग और शिकायतकर्ता का अपहरण, अपहरण और पिटाई शामिल थे। अपीलार्थी-मूल रिट याचिकाकर्ता ने बॉम्बे उच्च न्यायालय के समक्ष 17.04.2020 पर आपराधिक रिट याचिका दायर की जिसमें 2020 की प्राथमिकी संख्या 119 और 2020 की 120 में जांच को एक स्वतंत्र जांच एजेंसी को स्थानांतरित करने और लोक सेवकों की जांच और अभियोजन के लिए धारा 197 Cr.P.C के तहत मंजूरी के लिए अनुरोध किया गया। 23.04.2020 पर, उच्च न्यायालय ने अंतरिम आदेश पारित किया कि एकत्र किए गए सीसीटीवी फुटेज और अन्य सबूतों को संरक्षित किया जाएगा और मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, ठाणे की सुरक्षित हिरासत में रखा जाएगा। आई. डी. 2 से आई. डी. 1 तक की अवधि के दौरान, राज्य पुलिस ने आरोपी संख्या 13 सहित 23 गवाहों के बयान दर्ज किए। मुख्य अभियुक्त का बयान गवाह के रूप में लिया गया था। इसके बाद वास्तविक जांच शुरू हुई। पहला आरोप पत्र आरोपी संख्या 1 से 10 के खिलाफ 07.12.2020 पर दायर किया गया। अभियुक्त संख्या 13-तत्कालीन मंत्री, जिनके खिलाफ गंभीर आरोप लगाए गए थे, यहां तक कि प्राथमिकी में भी नामित किया गया था, के खिलाफ आरोप पत्र दायर नहीं किया गया था। यहां तक कि उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप और विभिन्न अंतरिम आदेश पारित करने के बाद सीडीआर, मोबाइल फोन आदि के रूप में प्रासंगिक सामग्री साक्ष्य भी एकत्र किए गए थे। अभियुक्त संख्या 11 और 12 के विरुद्ध पूरक आरोप-पत्र 28.07.2021 पर दाखिल किया गया। अभियुक्त संख्या 13 पर पूरक आरोप-पत्र में आरोप-पत्र भी नहीं लगाया गया था। आरोपी संख्या 1 से 12 के खिलाफ 28.08.2021 पर आरोप तय किए गए। इसके बाद ही आरोपी संख्या 13 के खिलाफ 05.03.2022 पर पूरक आरोप पत्र दायर किया गया। 12.2 उपरोक्त से यह देखा जा सकता है कि संबंधित समय पर राज्य की जांच एजेंसी द्वारा कोई उचित जांच नहीं की गई थी और यहां तक कि सामग्री साक्ष्य भी एकत्र नहीं किए गए थे। दोहराव की कीमत पर, यह देखा गया है कि उच्च न्यायालय के समक्ष रिट याचिका के लंबित रहने के दौरान और उच्च न्यायालय द्वारा पारित विभिन्न आदेशों के अनुसार, राज्य की जांच एजेंसी को मामले में जांच करने के लिए मजबूर किया गया था और देर से आरोपी संख्या 13 पर मार्च, 2022 के महीने में आरोप पत्र दायर किया गया था। यहाँ तक कि राज्य की जाँच एजेंसी के अनुसार, अभी भी कुछ पहलुओं पर आगे की जाँच की आवश्यकता

है। कुछ चित्रण/उदाहरण जिनके लिए आगे की जांच की आवश्यकता है, प्रत्यर्थी संख्या 1 से 3 की ओर से दायर जवाबी हलफनामे के पैराग्राफ 4 में वर्णित हैं। विस्तृत कारण और आगे की जांच की क्या आवश्यकता है, इस आशंका पर नहीं कहा गया है कि यदि ए

ग

डी.

ई.

च

जी.

एच.

77

अनंत थानूर कर्मसे बनाम महाराष्ट्र राज्य और ओआरएस। [एम. आर. शाह, जे.] ए.

इस स्तर पर इसका खुलासा किया जाता है, यह जांच/आगे की जांच के उद्देश्य को विफल कर सकता है।

12.3 चाहे जो भी हो, राज्य की जाँच एजेंसी के अनुसार, आगे की जाँच की आवश्यकता है। जैसा कि इस न्यायालय द्वारा उपरोक्त निर्णयों में देखा और अभिनिर्धारित किया गया है, पीड़ित को निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई का मौलिक अधिकार है। इसलिए, केवल आरोप पत्र दाखिल करना और आरोप तय करना आगे की जांच/पुनः जांच/नए सिरे से जांच का आदेश देने में बाधा नहीं हो सकती है, अगर तथ्यों की आवश्यकता है।

13. अब, जहाँ तक अभियुक्त की ओर से यह निवेदन है कि पहले राज्य ने विद्वान ए. जी. के माध्यम से रिट याचिका का विरोध किया था और प्रस्तुत किया था कि एक निष्पक्ष जांच हुई थी और अब शक्ति परिवर्तन के साथ, राज्य एजेंसी ने अपना रुख बदल दिया है, न्यायालय संबंधित समय पर और अब राज्य द्वारा लिए गए रुख से संबंधित नहीं हैं। यह कहने के लिए पर्याप्त है कि प्रासंगिक समय पर जब राज्य पुलिस एजेंसी ने एक विशेष रुख अपनाया, तो आरोपी संख्या 13 सत्ता में था और मंत्री था। ऊपर वर्णित तथ्यों से पता चलता है कि किस तरीके से पहले की जांच की गई थी और आरोपी संख्या 13 पर केवल मार्च, 2022 के महीने में दूसरे पूरक आरोप पत्र में आरोप पत्र दायर किया गया था और उससे पहले नहीं जब पहला आरोप पत्र दायर किया गया था, पूरक आरोप पत्र दायर किया गया था और तब भी जब अन्य अभियुक्तों के खिलाफ आरोप तैयार किए गए थे। न्यायालय का प्रयास केवल निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई होना चाहिए। इसलिए, ऊपर वर्णित मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, हमारी राय है कि आगे की जांच के लिए एक मामला बनाया गया है और राज्य एजेंसी को आगे की जांच करने और आगे की सामग्री को रिकॉर्ड पर लाने की अनुमति दी जा सकती है, जो निष्पक्ष जांच और निष्पक्ष सुनवाई को आगे बढ़ाने में हो सकती है। उच्च न्यायालय ने 2020 की संख्या 119 और 120 वाली एफ. आई. आर. में राज्य पुलिस एजेंसी को आगे की जांच करने का आदेश और/या अनुमति नहीं देने में बहुत गंभीर गलती की है। उच्च न्यायालय ने ऊपर वर्णित प्रासंगिक पहलुओं पर विचार नहीं किया है और इसलिए इस न्यायालय का हस्तक्षेप आवश्यक है।

ग

डी.

ई.

च

जी.

14. उपरोक्त और ऊपर बताए गए कारणों को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान अपील आंशिक रूप से सफल होती है। 2020 की एफ. आई. आर. संख्या 120 की जाँच को सी. बी. आई. को स्थानांतरित करने से इनकार करने वाले उच्च न्यायालय द्वारा पारित विवादित निर्णय और आदेश की पुष्टि की जाती है। उच्च न्यायालय द्वारा पारित विवादित निर्णय और आदेश ने आगे की जांच/पुनः जांच का आदेश देने से इनकार कर दिया।

एच.

78

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

एतद्द्वारा जाँच को रद्द कर दिया जाता है और अलग कर दिया जाता है और हम राज्य की जाँच एजेंसी को 2020 की संख्या 120 वाली एफ. आई. आर. की आगे की जाँच करने का निर्देश/अनुमति देते हैं और आगे की जाँच किन पहलुओं पर की जाएगी, यह राज्य की जाँच एजेंसी के विवेक पर छोड़ दिया जाता है। आगे की जाँच की जानी चाहिए और जितनी जल्दी हो सके, अधिमानतः वर्तमान आदेश की प्राप्ति की तारीख से तीन महीने की अवधि के भीतर पूरी की जानी चाहिए और आगे की पूरक रिपोर्ट मुकदमे में विद्वान मजिस्ट्रेट के समक्ष/उसके बाद तुरंत संबंधित निचली अदालत के समक्ष रखी जानी चाहिए, जिस पर निचली अदालत द्वारा कानून के अनुसार और अपने गुण-दोष के आधार पर विचार किया जा सकता है और आरोपी पर तदनुसार और कानून और गुण-दोष के अनुसार मुकदमा चलाया जा सकता है।

ग

वर्तमान अपील की आंशिक रूप से उपरोक्त सीमा तक अनुमति है।

अंकित ज्ञान

अपील की आंशिक रूप से अनुमति है।

(सहायक: अभिषेक अग्रिहोत्री और राहुल राठी, एलसीआरए)

डी.

ई.

च

जी.

एच.